अध्याय-16

छन्द

निश्चित वर्ण आ मात्रा सब के विराम, गति, यति वगैरह से बन्हाइल शब्द योजना के छन्द कहल जाला।

छन्द के अंग के रूप में वर्ण, मात्रा, संख्या, यति, गति, तुक, चरण वगैरह पर विचार कइल जरूरी बा।

वर्ण- वर्ण दू तरह के होला-**स्वर** आ **व्यंजन**। छन्द शास्त्र में वर्ण के गिनती करत समय व्यंजन के ना गिनल जाए, खाली स्वर के गणना होला। जइसे 'स्त्री' शब्द (स्+त्+र्+ई-स्त्री) में चार वर्ण बाटे, बाकिर, एकरा के एक ही गिनल जाई काहे से कि एके गो स्वर-ई बाटे।

मात्रा-छन्द शास्त्र में स्वर के मात्रा कहल जाला। स्वर कहला से स्वर से युक्त व्यंजन भी लिहल जाला।

ह्रस्व-स्वर-एक मात्रा वाला स्वर के ह्रस्व कहल जाला। जइसे-अ, इ, उ, ऋ। जइसे-मुनि।

दीर्घ-स्वर-दू मात्रा वाला स्वर के दीर्घ स्वर कहल जाला। जइसे-आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ। एह स्वर सब के उच्चारण में एक मात्रा वाला स्वर से जादे समय लागेला। उदाहरण खातिर- गीता।

एह तरह से ह्रस्व के एक मात्रा आ दीर्घ के दू मात्रा मानल जाला।

संख्या आ क्रम-मात्रा अउर वर्ण का गिनती के संख्या कहल जाला।

लघु आ गुरु-जवना वर्ण के एक मात्रा होखे आ ऊ अनुस्वार अउर विसर्ग से रहित होखे, ओके 'लघु' कहल जाला। मतलब कि अ, इ, उ, ह्रस्व आ इनका साथ मिलल एक, दू, तीन चाहे एकरा से अधिक व्यंजन के लघु मानल जाला। जइसे-'नयन' में तीन वर्ण लघु बा।

चन्द्रविन्दु वाला ह्रस्व स्वर भी लघु मानल जाला। जइसे-'हँसी' में 'हँ' लघु बाटे।

आ, ई, ऊ त्रह वगैरह दीर्घ स्वर आ एकनी से मिलल व्यंजन वर्ण 'गुरु' होला। जइसे-नाना, मीता।

ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर से मिलल व्यंजन वर्ण गुरु होला। जइसे-पैसा, पैना, लेखा।

अनुस्वार वाला सब वर्ण गुरु होला। जइसे-लंगा, चंगा, रंगा। विसर्गान्त सब वर्ण गुरु होला। जइसे-दुःख।

संयुक्त वर्ण से पहिले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला। जइसे-'सत्य' में 'स' 'कर्म' में 'क'।

हल् अक्षर से पहले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला जइसे-'सत!' में 'स' गुरु बा।

पाद के अन्त में होखे वाला लघु वर्ण के भी कबहुँ-कबहुँ जरूरत का मोताबिक गुरु मानल जाला।

यति

'विराम' के यति कहल जाला। विराम से मतलब ई बा कि जहाँ कुछ देर खातिर ठहरल जाए।

गति

छन्द में पढ़े वाला लय के गति कहल जाला। मात्रा के संख्या पूरा भइलो पर 'गति' भा 'लय' के बिना छन्द ना बने।

तुक

पाद का अन्त में स्वर सहित वर्ण का आवृति के तुक कहल जाला। तुक का प्रयोग से कविता में एगो विशेष कर्ण-प्रियता आ कमनीयता आ जाला। तुक के ही अलंकार में **'अन्त्यानुप्रास'** कहल जाला।

पाद भा चरण

कवनो पाद के चउथा भाग के पाद भा चरण कहल जाला। छन्दशास्त्र का नियम के अनुसार कबहीं-कबहीं एक पद्य के चार से बेसी चरण होखेला। जइसे- छप्पय मे छव गो चरण होला।

छन्द के भेद

चरण का गति के आधार पर वर्णिक छन्द आ मात्रिक छन्द के तीन भेद कइल जाला-सम, अर्द्धसम आ विषम।

जवना छन्द के चारों चरण आ वर्ण के दृष्टि से समान होखेला, ओके सम कहल जाला।

जवना छन्द के पहिला आ तीसरा आउर दूसरा आ चउथा चरण समान होखे, ओके अर्द्धसम कहल जाला। दोहा-सोरठा उदाहरण बा।

जवना छन्द के चरण में कवनों नियमित समानता ना होखे, ओके विषम कहल जाला।

भोजपुरी कवितन में प्रयुक्त कुछ छन्द-

छंद

दोहा

ई मात्रिक अर्धसम छन्द ह। 'प्राकृत पैंगलम (1178) के अनुसार ९ह छन्द का पहिला आ तीसरा पाद में 13-13 मात्रा आउर दूसरा आ चउथा पाद में 11-11 मात्रा होखेला। यति पाद के अन्त में होला, विषम चरण का शुरू में जगण ना होखे के चाहीं। अन्त में लघु होखे के चाहीं। जइसे-

तीरथ राज प्रयाग जा, नहा त्रिवेणी नीर।
पाँव पूजि मुनि-लोग से, हाल कहे रघुवीर॥

-**श्रद्धानन्द पाण्डेय** (श्री राम कथा) पृ. 56

जय जय जयकारि कर, अतुल तुमुल ध्वनि बोलि।
हरख उमँग उत्साह से, दल गरजत दिल खोलि॥

-दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण लंका काण्ड) पृ. 43

सोरठा

ई मात्रिक अर्धसम छंद ह। 'प्राकृत पैंगलम' में सोरठा अपभ्रंश सोरठा आ सौराष्ट्रम के दोहा का उलटा कहल गइल बा (1:170)। एकरा विषम पाद में 11-11 आ समपाद में 13-13 मात्रा होला। तुक पहिला आ तीसरा पाद में मिलेला। कतही-कतहीं दूसरा आ चउथा में मिल जाला। जइसे-

समर जीति दशशीश, सिया छुड़ा पुष्पक चढ़ल।
रामचन्द्र जगदीश, लौटि रहल बाड़े अवध॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 170

श्यामल-मेघ-शरीर, लोचन लाल-विशाल के।
भजु मनवाँ रघुवीर, दूर करू भव जाल के॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 128

हरिगीतिका

ई 28 मात्रा के छन्द ह, जवना में 16 आ 12 मात्रा पर यति होला। अन्त में लघु -गुरु होखे के चाहीं। उदाहरण-

भरल पाल-घट सिर पर धइलीं, मल से मन नहववलीं।

पर निंदा धरफोरी कइलीं, केहू के ना भवलीं।

अनका पथ के रोड़ा बनलीं, आपन गरज पटवलीं।

जीवन आपन तोर मोर का 'झगड़ा' में बिनसवलीं॥

कुण्डलियाँ

कुन्डलिया विषम मात्रिक छन्द ह जवना में प्राय: छव चरन होला। एकर दू पहिल दोहा के आ पिछला चार चरन रोला के होला। एकरा ह क चरन में 24-24 मात्रा होला।

कुन्डलिया में एगो दोहा के बाद एगो रोला छन्द होला। एकर जवना शब्द से सिरी गनेस होला, अंतो ओही शब्द से होखे के चाहीं। कबो-कबो शुरू आ अंत में कई शब्द समान होलें। एही तरह से दोहा के अन्त के अंश रोला के शुरू के अंश में दोहरा दिहल जाला।

''प्राकृत पैंगलम्' के अनुसार रोला के दूसरका चरन के पूर्वांश के आवृत्ति भी तीसरा चरन में कइल जाला।

उदाहरण–

बा बिनती सिरी स्याम से, मन पावन हो थीर

गुन गाईं हम झूमि के, मन मोहन यदुवीर॥

मनमोहन यदुवीर, बखानी जसुमति छइया।

द्वापर के सिर मउर, हरि निरधन के भइया।

करत पाप अरू मोह, रटन कइला प नाम से

रहूँ चरन चिल्लाय विनय बा इहे श्याम से

–रामबचन शास्त्री 'अँजोर', (निरधन के घनश्याम), पृ॰ 16

रोला

श्वास करके वीर रस आ वर्णनात्मक काव्य में प्रयोग में आवे वाला एह मात्रिक छन्द का प्रत्येक चरण में 24 मात्रा होला। 11 आ 13 मात्रा पर विराम होला। अन्त में दू गुरु चाहे दूगो लघु होखे के चाही।

उदाहरण–

बीतल बारह बरिस, पंडवन के वन माही।

मधुसूदन के छोड़ि, न लउकल केहू दाही॥

खतम भइल अज्ञात, विराटे का रजधानी।

परगट भइले बीर, बिता सउँसे हलकानी॥

–रामवचन शास्त्री 'अंजोर' (निरधन के घनश्याम, पृ॰ 55)

आल्हा

एह मात्रिक छन्द के प्रत्येक चरण में एकतीस मात्रा रहेला आ 16 अउर 15 मात्रा पर विराम होला चाहे 8, 8 आ 15 पर विराम होला। प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु-लघु होखे के चाहीं।

उदाहरण-**तब छाती पर भार दिआवसु, पाँच जने के एके बार,**
बीसन नवहा हुमचु दबावसु, कुँलचि उठेले सभके झार।
घंटन रहे सगल रोजाना, कवन लगाई बल के थाह,
कइ हाथिन के बल फाटत बा, उपटल नवहा माल सोखाह।
-डॉ॰ सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ॰ 23)

बिरहा

ई मुख्य रूप से प्रेम आ विरह के उपयुक्त व्यंजना खातिर सार्थक लोकधुन बा। वियोग श्रृंगार के अधिकांश अभिव्यक्ति बिरहा में भइल बाटे। एह लोकधुन के जन्म भोजपुरिये प्रदेश में भइल बाटे। बिरहा के 16गो लोक प्रचलित प्रकार बा। बाकिर, एह में से एक जवना में दू चरण होला। दूसरा चरण के अन्त गुरू (ऽ) आ लघु (।) होला। साहित्यिक कृतियन मे एह प्रकार के प्रचलन जादे बाटे। कुछ उदाहरण-

लजिया दबावे मनमथवा सतावे मोसे एको छन रहलो न जाय।
लखि बल बिरवा जमुनवा के तीखा री हियरा के धीखा नसाय॥
-रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ॰ 143)

नगीचे बहत रहे नदिया जमनवा से बनी लेली लोटवा उठाय।
सुनत नूँ बाड़ मोती अजुबा कहनिया हो पर ना हुँकारी चितलाय॥

-मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ॰ 16)

झूमर

लोकगीतन में, खास करके भोजपुरी लोकगीतन के ई प्रिय गीत प्रकार ह, जवना में शृंगार का दूनू पक्ष के वर्णन आवेला। एकर लय मस्ती से भरल होखेला। उदाहरण-

का जनिहें का जनिहें का जनिहें हो
दुख मोर कन्हाइया का जनिहें
बीच डहरिया में फोरले गगरिया
घरवा में अइले व मरली मतरिया
गागर के दमवा चुका जइहे। ॥ दुख॥

-रामसूरत राम (गोपी विरह, पृ॰ 56)

सोहर

ई लमहर बहर वाला छन्द प्रकार ह, जवन औरत के गर्भधारन के बाद से लेके पुत्र जनमला के बाद तक गावल जाला। हर पाँति के अन्त में हहें चाहे हो जरूर गावल जाला। हर दोसरका 'पाँति' में 'ए ललना' चाहे अउरू कवनो सम्बोधन कइल जाला। जइसे-

आवहु मोर परोसिन, गीत दयादिन हो ललना,

होरिला जनमवा के सोहर, गाइ सुनावहु हो।

-**लोक प्रचलित गीत** (भोजपुरी लोकोक्ति और मुहावरे, पृ॰ 16)

आनन्द घर-घर अवध नगर नौबत बाजत हो ललना,

बढ़ि अइले हिया से हुलास सुमंगल साजत हो।।1।।

रघुकुल कमल दिनेस अवध में उदय लेलन हो ललना,

खिली ग़इल जस सबलोक सुनत मन मोद भइल हो।।2।।

-**कवि हरिनाथ** (भोजपुरी कवि और काव्य, पृ॰ 163)

सवैया

सवैया के कवनो एगो लक्षण नइखे। एकर चरण 22 से 26 वर्ण वाला होला। ब्रजभाषा का एह प्रचलित छन्द के आन-आन भाषा का पद्य-रचना खातिर खूब उपयोग भइल बा। एकर प्रमुख भेद-पाँच छव गो बाटे। 22 अक्षर के मालिनी आ मदिरा सवैया भी कहल जाला। 24 अक्षर वाला दुर्मिल सवैया में सात मगन (।।ऽ) आ एगो गुरु होला। 23 वर्ण का मत गयंद सवैया में सात गो भगण (ऽ।।) आ एगो गुरु होला। 23 वर्ण का मत गयंद सवैया में सात गो भगन (ऽ।।) आ अन्त में दू गो गुरु होला। एकरा के मालती सवैया भी कहल जाला। 24 अक्षर वाला दुर्मिल सवैया

में आठ गो सगण (।।ऽ) होला। किरीट सवैया (24 वर्ण) में आठ गो भगण (ऽ।।) होला। सुन्दरी सवैया (24 अक्षर) में आठ गो सगण (।।ऽ) आ एगो गुरु रहेला। सुख सवैया 26 वर्ण के होला, जवना में आठ गो सगण (।।ऽ) आ अन्त में दू गो लघु होला।

भोजपुरी के कवि लोग मतगयंद या मालती सवैया के रचना प्रचुरता के साथ कइले बा। भेजपुरी में खोजला पर दुर्मिल आ किरीट सवैया के उदाहरण भी मिलेला। उदाहरण–

मतगयंद (मालती)–

पाहन ऊपर राज निदेश लिखा सगरो रखले रघुराई
वञ्चक चोर लुटेर तथा नर घातक के शिर काटि टँगाई
जे अनुशासन ना मनिहें अपवाद बिन चठ दण्ड दियाई
मोर निहोर न धर्म विरूद्धल काज करीं कवहीं पुर माई

–**श्रद्धानन्द पाण्डेय** (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

दुर्मिल

सुखदायक नेहत जे सबके हितकारक मातु–पिता हउवे
जग के मरूभूमि–पियासल आकुल हेतु सुधा सरिता हउवे

जवना सिय नायक के महिमा लखि लाजत कल्पलता हउवे

उनुके पद पुष्प चढ़ावल, पाटल सप्तशती कविता हउवे

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

किरीट-

पोषल-सुन्दर-तेज कुरंगम, रावण मारिच के बहकावल

देखि सिया भइली 'ति लोभित, हम लजावत लेप लगावल

हे प्रभु स्वर्णमृगा तन छाल हमें इति दी अनवा मन भावल

ई सुनते रघुनायकजी धनुसायक ले गइले अनु धावल

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

कवित

ई वर्णिक दंडक छन्द ह। एह में 26 से लेके 33 तक ले वर्ण प्रत्येक चरण में होला। अन्त में गुरु-लघु-गुरु के कतहीं-कतहीं भेद कर लिहल जाला। 31 अक्षर के कवित्त मनहरण, 32 के अलहरण आ रूप घनाक्षरी अउर 33 के देव घनाक्षरी कहाला।

घनाक्षरी (31 वर्ण), अन्त में गुरु होला। एकरा सोलहवाँ वर्ण पर चरण का अन्त में यति होला। उदाहरण-

सारी बहुआरी बाटै विविध किनारी बाटै,
सलमा सितारी बेल बूटी धूप छहियाँ।
फीक बाटै, गाढ़ बाटे, लागल, पहाड़ बावे,

मखमली पाढ़ बाटे सिलिक मखनहियाँ।
रघवा जउ होत आज आगे ठाढ़ि होई जात,
पूछि लेत कान्ह ले पकड़ि दूनऊँ बहियाँ।
मोरे आगे कमरी तू ओढ़ के चरउल गाई,
बोल कान्ह सारी कहाँ पउल रेसमहियाँ।

-**चन्द्रशेखर मिश्र** (द्रोपदी, पृ॰ 125)

चौपाई

ई मात्रिक सम छन्द ह। प्राकृत आ अपभ्रंश का 16 मात्रा के वर्णनात्मक छन्दन का आधार पर विकसित हिन्दी आ आधुनिक भारतीय भाषा के सर्वप्रिय आ आपन छन्द ह। पाद का अन्त में दू गो गुरु होला। तुक पहिला चरण के दोसरा से आ तीसरा के चउथा से मिलेला। यति पाद के अन्त में होला, जइसे-

जब से राम व्याहि घार अइलें।
अवध मोद मंगल नित बढ़ले॥
देस नगरपुर राज पनपलें।
प्रजा मुदित सुख सगर बरिसलें।

-**दुर्गाशकर प्रसाद सिंह ''नाथ''** (साहित्य रामायण, अयोध्या आ अरण्य काण्ड, पृ॰ 5)

टूटल ताहि समय मुनि ध्याना।
देखहिं राजकुमार समाना॥
शिशु किशोर बालक बनवासी।
शिलाखण्ड बइठल सन्यासी।

–अर्जुन सिंह 'अशान्त' (बुद्धायन, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जुलाई 60 पृ॰ 2)

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दोहा कवन छन्द ह।

(क) वर्णिक (ख) मात्रिक

(ग) अर्ध सम (घ) पूर्ण सम

2. 'कवित' कवन छन्द ह।

(क) वर्णिक (ख) मात्रिक

(ग) विरहा (घ) सोहर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. छन्द के परिभाषा बताईं।

2. छन्द का अंगन के परिचय दीं।

3. कवनों दू छन्दन के उदाहरण सहित 'लक्षण' बताईं।